शाम ए ग़ज़ल में खोए श्रोता

मास्टरमाइंड एवं डिवाइन के-3 का होली मिलन समारोह

रायपुर। रंग, तरंग और उमंग के संयोजन के बीच सधी हुई ग़ज़ल गायिकी ने आनंद की एक अद्भुत छटा बिखेरी। सुनने वाले रसिक इस खुशगवार पलों को संजोने में भी पीछे नही रहे।

बूढ़ापारा स्थित एसयूआर काम्पलेक्स में मास्टरमाइंड क्लासेस एवं डिवाइन के -3 द्वारा सोमवार को शाम ए गजल सांगीतिक कार्यक्रम एवं होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। सुरों के रंग से सबको सराबोर करने में राजधानी के उभरते ग़ज़ल गायक श्री अश्वनी कुमार वर्मा ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

शास्त्रीय शैली के गजलों को सुनने संगीत के सुधीजन उमड़ पड़े। ग़ज़ल गायिकी के दौर में सबसे पहले श्री वर्मा ने नरेश कुमार रचित 'बदगुमा मुझसे न ऐ फसले बहार...' पेश किया। इसके बाद बशीर बद्र की रचना 'ये चिराग़ बेनज़र है...' की आनंदित करने वाली प्रस्तुति दी। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने अनुपम वर्मा लिखित 'तेरी जुल्फों के साए में...' सुनाया। सुरों की यह महफिल देर रात तक जमीं रही। उनके साथ श्री रामचंद्र(तबला), श्री सुधाकर (सितार) एवं इकबाल सिंह (गिटार) ने संगत किया।

24/03/08 - हरिभूमि

24/03/08

शाम ए ग़ज़ल में खिले अश्विनी वर्मा

कला प्रतिनिधि

रायपुर. पटियाला घराने की गायकी का अंदाज़ क्या होता है इसे आज ग़ज़ल प्रेमियों ने अश्विनी कुमार वर्मा से जाना. छत्तीसगढ़ में सौ से अधिक बरस पुरानी गायकी की विरासत अपने कांधे पर उठाए इस दर्जेदार गायक को गुणी श्रोताओं से अच्छी दाद मिली.

डिवाइन के श्री और मास्टर माइंड क्लासेस छत्तीसगढ़ में विद्यार्थियों के मध्य जाना पहचाना नाम है. इन संस्थाओं के बैनर तले आज रात बूढ़ापारा स्थित वर्मा काम्पलेक्स में शाम ए ग़ज़ल की महफिल सजाई गई थी. मास्टर माइंड के प्रमुख प्रो. दिलीप वर्मा ने गायिका अश्विनी कुमार वर्मा का

दर्जेदार ग़ज़ल गायकी

परिचय देते हुये बताया कि संस्था वर्ष में एक दफे ग़ज़लों की महफिल सजाती है. गत वर्ष नई दिल्ली तो नईम अली आए थे. इस कड़ी में छत्तीसगढ़ के अश्विनी कुमार वर्मा को वे शौकीनों की खातिर लाए हैं. प्रदेश के इस गायक ने अपनी बेहतरीन गायकी से गुणी श्रोताओं के मध्य हमेशा पैठ बनाई है, इसलिये उनका चुनाव किया गया.

इधर, गायक अश्विनी कुमार वर्मा जो आकाशवाणी- दूरदर्शन के ए ग्रेड ग़ज़ल गायक हैं. सुनने वालों को अपने फन से मुग्ध कर दिया. शायर नरेश कुमार शाद की ग़ज़ल 'बदगुमा मुझसे न ए फसले बहारा होना' से की. इसके बाद लगभग दो घंटे तक उन्हें सुना गया. रागों में भीगी गायकी के साधक अश्विनी कुमार वर्मा ने मधुकौंस, यमन कल्याण, भीमपलासी समेत अन्य रागों पर भी गजलें सुनाई. पंजाबी रचनाएं भी उनसे सुनी गई. अंचल के उभरते नवोदित शायर अनुपम वर्मा की गजलें भी स्वरबद्ध कर गायक ने सुनाई. इस कलाकार के संग तबला पर थे रामचंद सर्पे जिन्होंने खूब दाद हासिल की. गठी हुई संगत रामचंद्र का गुण है. सितार पर सुधाकर शेवलीकर, गिटार- इकबाल सिंग, सिंथेसाइजर पर सिराज थे. कार्यक्रम से पूर्व तपेश जैन, डा. कुंजबिहारी शर्मा, मधुसूदन शर्मा, अनुपम वर्मा ने कलाकारों का स्वागत किया. संचालन कर रही थी मधुमिता, आभार माना- दिलीप वर्मा ने.

दै. भास्कर